(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. III, Jul-Sep ISSN: 2249-4642

भारत का आर्थिक एवं व्यापारिक वर्तमान परिदृश्य

KHANDARE SAMBHA PANDURANG

RESEARCH SCHOLAR, DEPT. OF ECONOMICS
CMJ UNIVERSITY, SHILLONG, MEGHALAYA

परिचय

भारत, पौराणिक जम्बूद्वीप, आधुनिक दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है। भारत का भौगोलिक विस्तार ८° ४' से ३७° ६' उत्तरी अक्षांश तक तथा ६८° ७' से ९७° २५'पूर्वी देशान्तर तक है। भारत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक ३,२१४ कि. मी. और पूर्व से पश्चिम तक २,९३३ कि. मी. है। भारत की समुद्र तट रेखा ७५१६.६ किलोमीटर लम्बी है। भारत, भौगोलिक दृष्टि से विश्व में सातवाँ सबसे बड़ा और जनसँख्या के दृष्टिकोण से दूसरा सब से बड़ा देश है। भारत के पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर-पूर्व में चीन, नेपाल, और भूटान और पूर्व में बांग्लादेश और म्यान्मार देश स्थित हैं। हिन्द महासागर में इसके दक्षिण पश्चिम मेंमालदीव, दक्षिण में श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व में इंडोनेशिया हैं। उत्तर-पश्चिम में अफ़गानिस्तान के साथ भारत की सीमा है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत है और दक्षिण में हिन्द महासागर है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी है तथा पश्चिम में अरब सागर हैं । भारत में कई बड़ी नदियाँ हैं । गंगा नदी भारतीय संस्कृति में अत्यंत पवित्र मानी जाती है। भारत में अन्य बड़ी नदियाँ सिन्धु, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, गोदावरी, कावेरी, कृष्णा, चम्बल, सतलज, व्यास आदि हैं।

भारत विश्व का वृहदतम लोकतंत्र है। यहाँ ३०० से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं [2]। यह विश्व की कुछ प्राचीनतम सभ्यताओं की जननी रहा है जैसे - सिन्धु घाटी सभ्यता, और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यापार पथों का अभिन्न अंग भी. विश्व के चार प्रमुख धर्म : सनातन-हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिख का उद्भव और विकास भारत में ही हुआ ।

भारत भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा राष्ट्र है। भारत की राजधानी नई दिल्ली है। भारत के अन्य बड़े महानगर मुम्बई (बम्बई), कोलकाता(कलकत्ता) और चेन्नई (मद्रास) हैं। १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ब्रिटिश भारत के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रमुख अंग भारत ने विगत २० वर्ष में सार्थक प्रगति की है, विशेष रूप से आर्थिक और भारतीय सेना एक क्षेत्रीय शक्ति और विश्वव्यापक शक्ति है। हाल के वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था ने बहुत प्रगति की है और वर्तमान स्थिति में विश्व की प्रथम पाँच अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। संप्रति भारत विश्व की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

मुद्रास्फीति की दरों के पिछले छह वर्षों के निचले स्तर पर पहुंच जाने के बाद अधिकांश गृहणियों को लग रहा था कि इससे उनका घरेलू बजट कम हो जाएगा लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं हुआ है।

महंगाई दर घटी लेकिन महंगाई बढ़ी

दिल्ली स्थित वित्तीय सेवा कम्पनी कास्सा के अर्थशास्त्री सिद्धार्थ शंकर ने कहा, "उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में गिरावट न आना ही हमारे लिए चिंता की बात है। दरअसल यह हमारी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत नहीं है।"

सरकारी आंकड़ों में मुद्रास्फीति की दर में लगातार गिरावट से आर्थिक विश्लेषकों को अपस्फीति (महंगाई दर के ऋणात्मक होने) का भय सताने लगा है किंतु आटा, चीनी, खाद्य तेल, फल एवं सब्जियों समेत अन्य रोजमर्रा की खान-पान की वस्तुओं के महंगा होने से आम आदमी का चूल्हा बुझने का खतरा पैदा हो गया है।

मुद्रास्फीति के संबंध में सरकार के साप्ताहिक आंकड़ों में कहा गया है कि 21 फरवरी को समाप्त सप्ताह में महंगाई दर लगातार घटते हुए 3.03 प्रतिशत पर आ गई है। इससे पहले वर्ष 2002 अक्टूबर में महंगाई की दर इस स्तर पर थी। पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 5.69 प्रतिशत दर्ज की गई थी। पिछले वर्ष दो

अगस्त को मुद्रास्फीति की दर 16 वर्ष की अधिकतम 12.91 प्रतिशत पर पहूंच गई थी। सरकार का दावा है कि बाजार में खाद्य वस्तुएं सस्ती हो रही हैं जबकि खुदरा बाजार के भाव इसके उलट कहानी कह रहे हैं।

खुदरा बाजार में चीनी के भाव 25 रुपए प्रति किलो तक पहूंच गए हैं और छोटे व्यापारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में इसके खुदरा भाव 30 रुपए प्रति किलो के आंकड़े को पार कर सकते हैं। दिल्ली थोक बाजार में चीनी का औसत मूल्य 2,300 रुपए प्रति क्विंटल चल रहा है जिसमें तेजी के आसार बने हुए हैं।

कारोबारियों का कहना है कि इस वर्ष चीनी का उत्पादन कम होने से मीठे के भाव चढ़ रहे हैं। सरकारी अनुमान के अनुसार इस वर्ष देश में एक करोड़ 70 लाख टन चीनी उत्पादित होने के आसार हैं जबकि पिछले वर्ष दो करोड़ 60 लाख टन चीनी का उत्पादन हूआ था। देश में प्रतिवर्ष दो करोड़ टन चीनी की खपत होती है।

सरकार ने चीनी की बढ़ती कीमतों को थामने के प्रयास करते हूए कच्ची चीनी आयात करने का फैसला किया है और 35 हजार टन कच्ची चीनी का ऑर्डर दिया जा चुका है। यह चीनी घरेलू बाजार के लिए उपलब्ध होगी। जानकारों का कहना है कि कीमतों को थामने के लिए सरकार के प्रयास केवल चुनाव के दौरान तक ही सीमित रहेंगे और इसके बाद चीनी के दाम बढ़ने तय है। इसलिए कारोबारियों ने बाजार में अपना माल उतारने से हाथ खींच लिया है।

देश में गेंहू का रिकॉर्ड उत्पादन होने का अनुमान है। पंजाब जैसे गेहूं उत्पादक राज्य केंद्र सरकार से अनाज भंडार खाली करने के लिए कह रहे हैं लेकिन बाजार में गेंहू की आवक सख्त बनी हूई है और 1,200 रुपए प्रति क्विंटल को छू रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार इस वर्ष गेहूं की पैदावार सात करोड़ टन का आंकड़ा पार कर सकती है। चावल का उत्पादन भी बढ़ने का अनुमान है। इसके उलट खुदरा बाजार में इस उत्पादन को झुठलाते हूए आटा 15 रुपए से 20 रुपए प्रति किलो के भाव पर बेचा जा रहा है।

खाद्य तेल एक और आवश्यक वस्तु हैं जिसने आम जनता का तेल निकाल रखा है। देश में मुख्य रुप से सरसों, मूंगफली और नारियल का तेल इस्तेमाल किया जाता है। देश में सरसों की रिकॉर्ड पैदावार होने का अनुमान है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सरसों की बुआई के रकबे में 35 प्रतिशत तक का इजाफा हूआ है जिससे सरसों की पैदावार में तकरीबन 40 प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान है।

थोक बाजारों में खाद्य तेल 3,500 रुपए से रुपए से 5,500 रुपए प्रति क्विंटल के भाव पर बेचे जा रहे हैं। इनमें बिनौला तेल, मूंगफली तेल, सरसों तेल, ताड़ का तेल, सोया तेल, चावल छिल्का तेल और तिल तेल शामिल हैं।

सरकार ने दावा किया है कि फल, सब्जियों, चाय और कुछ दालों के मूल्यों में गिरावट आई है। खुदरा बाजार में दालों की कीमतें 40 रुपए लेकर 60 रुपए प्रति किलो पर रुकी हूई है। हालांकि थोक बाजारों में नई फसल आ गई है और थोक भाव 2,200 रुपए से लेकर 4,000 रुपए प्रति क्विंटल के बीच चल रहे हैं। चने के थोक भाव 2,100 रुपए प्रति क्विंटल के आस-पास है लेकिन खुदरा बाजार में इसका भाव 40 रुपए प्रति किलो है।

फल और सब्जियों के भाव भी ऊंचे रुख पर हैं। बाजार मौसमी फल अंगूर 40 रुपए से 50 रुपए, संतरा 30 रुपए प्रति किलो और बेर 40 रुपए के प्रति किलो भाव पर हैं। सब्जियों में भी तेजी बनी हूई है। अकेले खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति की दर देखी जाए तो वह अभी भी सात-आठ प्रतिशत के स्तर पर बनी हुई है।

अर्थव्यवस्था

सूचना प्रोद्योगिकी (आईटी) भारत के सबसे अधिक विकासशील उद्योगों में से एक है, वार्षिक आय २८५० करोड़ डालर, इन्फोसिस, भारत की सबसे बडी आईटी

कम्पनियों में से एक मुद्रा स्थानांतरण की दर से भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में दसवें और क्रयशक्ति के अनुसार चौथे स्थान पर है। वर्ष २००३ में भारत में लगभग ८% की दर से आर्थिक वृद्धि हुई है जो कि विश्व की सबसे तीव्र बढती हुई अर्थव्यवस्थओं में से एक है। परंतु भारत की अत्यधिक जनसंख्या के कारण प्रतिव्यक्ति आय क्रयशक्ति की दर से मात्र ३,२६२ अमेरिकन डॉलर है जो कि विश्व बैंक के अनुसार १२५वें स्थान पर है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार २६५ (मार्च २००९) अरब अमेरिकी डॉलर है। मुम्बई भारत की आर्थिक राजधानी है और भारतीय रिजर्व बैंक और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का मुख्यालय भी। यद्यपि एक चौथाई भारतीय अभी भीनिर्धनता रेखा से नीचे हैं, तीव्रता से बढ़ती हुई सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के कारण मध्यमवर्ग में वृद्धि हुई है। १९९१ के बाद भारत में आर्थिक सुधार की नीति ने भारत के सर्वंगीण विकास मे बड़ी भूमिका निभाई है।

१९९१ के बाद भारत में हुए आर्थिक सुधारों ने भारत के सर्वांगीण विकास मे बड़ी भूमिका निभाई। भारतीय अर्थव्यवस्था ने कृषि पर अपनी ऐतिहासिक निर्भरता कम की है और कृषि अब भारतीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का केवल २५% है। दूसरे प्रमुख उद्योग हैं उत्खनन, पेट्रोलियम, बहुमूल्य रत्न, चलचित्र, वस्त्र, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं, तथा सजावटी वस्तुऐं। भारत के अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र उसके प्रमुख महानगरों के आसपास स्थित हैं। हाल ही के वर्षों में $१७२० करोड़ अमरीकी डालर वार्षिक आय२००४-२००५ के साथ भारत सॉफ़्टवेयर और बीपीओ सेवाओं का सबसे बडा केन्द्र बन कर उभरा है। इसके साथ ही कई लघु स्तर के उद्योग भी हैं जोकि छोटे भारतीय गाँव और भारतीय नगरों के कई नागरिकों को जीविका प्रदान करते हैं। पिछले वर्षों में भारत में वित्तीय संस्थानों ने विकास में बड़ी भूमिका निभाई है।

केवल तीस लाख विदेशी पर्यटकों के प्रतिवर्ष आने के बाद भी भारतीय पर्यटन राष्ट्रीय आय का एक अति आवश्यक, परन्तु कम विकसित स्रोत है। पर्यटन उद्योग भारत के जीडीपी का कुल ५.३% है। पर्यटन १०% भारतीय कामगारों को आजीविका देता है। वास्तविक संख्या ४.२ करोड है। आर्थिक रूप

से देखा जाए तो पर्यटन भारतीय अर्थव्यवस्था को लगभग $४०० करोड डालर प्रदान करता है। भारत के प्रमुख व्यापार सहयोगी हैं अमरीका, जापान, चीन और संयुक्त अरब अमीरात।

भारत के निर्यातों में कृषि उत्पाद, चाय, कपड़ा, बहुमूल्य रत्न व आभूषण, साफ़्टवेयर सेवायें, इंजीनियरिंग सामान, रसायन तथा चमड़ा उत्पाद प्रमुख हैं जबकि उसके आयातों में कच्चा तेल, मशीनरी, बहुमूल्य रत्न, उर्वरक (फ़र्टिलाइज़र) तथा रसायन प्रमुख हैं। वर्ष २००४ के लिये भारत के कुल निर्यात $६९१८ करोड़ डालर के थे जबकि उसके आयात $८९३३ करोड़ डालर के थे।

सन्दर्भ

1. http://www.supremecourtofindia.nic.in/judges/judges.htm
2. "Ethlologue report for India". अभिगमन तिथि: 20 अगस्त, 2008.
3. "Hindustan". Encyclopædia Britannica, Inc.. 2007. अभिगमन तिथि: 2007-06-18.
4. "Introduction to the Ancient Indus Valley". Harappa. 1996. अभिगमन तिथि: 2007-06-18.
5. "How ancient are the Vedas". Yahoo Answers. 2009. अभिगमन तिथि: 2009-11-30.
6. Jona Lendering. "Maurya dynasty". अभिगमन तिथि: 2007-06-17.
7. "Gupta period has been described as the Golden Age of Indian history".*National Informatics Centre (NIC)*. अभिगमन तिथि: 2007-10-03.
8. Heitzman, James. (2007). "Gupta Dynasty," Microsoft® Encarta® Online Encyclopedia 2007
9. "History : Indian Freedom Struggle (1857-1947)". National Informatics Centre (NIC). अभिगमन तिथि: 2007-10-03. "And by 1856, the British conquest and its authority were firmly established."
10. २००१ की जनगणना के आधार पर

11. "The Non-Aligned Movement: Description and History", *nam.gov.za* (The Non-Aligned Movement), 21 September 2001, अभिगमन तिथि: 23 August 2007

12. Gilbert, Martin (17 December 2002), *A History of the Twentieth Century: The Concise Edition of the Acclaimed World History*, HarperCollins, प॰ 486–487,आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9780060505943, अभिगमन तिथि: 22 July 2011

13. http://library.fes.de/pdf-files/bueros/genf/50205.pdf

14. (PDF) *India's negotiation positions at the WTO*, November 2005, अभिगमन तिथि: 23 August 2010

15. http://www.un.int/india/india_and_the_un_pkeeping.html

16. *Analysts Say India'S Power Aided Entry Into East Asia Summit.* | *Goliath Business News*, Goliath.ecnext.com, 29 July 2005, अभिगमन तिथि: 21 November 2009

IJRSSH